हिंदी भाषा में तुर्की शब्द और उनके विषयगत समूह

सलीमोवा शाहिनाबोनू उच्कुन क़िज़ी
ताशकंद ताशकंद राजकीय प्राच्या विद्या विश्वविद्यालय
पूर्वी देशों की भाषाएँ एवं साहित्य संस्थान
पत्रकारिता विभाग
प्रथम वर्ष, हिंदी–अंग्रेज़ी समूह की छात्रा
फ़ोन: +998507012651
शोध-निर्देशक: **कमोला रहमतजोनोवा**
डॉक्टर ऑफ़ फिलॉसफ़ी (PhD), सह-प्राध्यापिका

सारांश: *प्रस्तुत शोध लेख में प्राचीन इतिहास वाली हिंदी भाषा की शब्दावली तथा उसमें सीमित संख्या में होते हुए भी सक्रिय रूप से प्रयुक्त तुर्की शब्दों का विश्लेषण किया गया है। विशेष रूप से इन तुर्की उधार शब्दों के हिंदी भाषा में प्रवेश के कारणों उनके विषयगत समूहों तथा संबंधित भाषायी परिवेश में अन्य शब्दों के साथ सक्रिय संपर्क की प्रक्रिया के दौरान शब्द संरचना और अर्थ (सेमांटिक) में होनेवाले परिवर्तनों पर प्रकाश डाला गया है। इस लेख के लिए मुख्य स्रोत के रूप में अ.स. बरखुदारोव, व.म. बेसक्रोवनी, ग. अ. ज़ोग्राफ तथा व.प. लिपरोवस्कीय के संपादन में प्रकाशित द्वि खंड "हिंदी–रूसी शब्दकोश" (हिंदी–रूसी शब्दकोश) का उपयोग किया गया है।*

मुख्य शब्द और वाक्यांश: *संस्कृत, ब्राह्मण, ऋग्वेद, ग़ज़नवी वंश, हिंद–आर्य भाषाएँ।*

समय के प्रवाह, प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास तथा वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप अनेक प्राचीन भाषाएँ और संस्कृतियाँ अपनी पारंपरिक विशेषताओं को खोती जा रही हैं और उनका प्रयोग सीमित होता जा रहा है। तथापि हिंदी भाषा आज भी अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को सुरक्षित रखते हुए उन भाषाओं में सम्मिलित है, जिन्होंने अपनी प्रासंगिकता और जीवंतता को बनाए रखा है। यह भाषा न केवल दक्षिण एशिया क्षेत्र की भाषायी और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतिनिधित्व करती है, बल्कि विश्व स्तर पर सहस्राब्दियों पुरानी परंपरा वाली प्राचीन भाषाओं में से एक के रूप में भी संरक्षित है।

विश्व की अन्य भाषाओं की भाँति हिंदी भाषा भी अपने विकास क्रम में विभिन्न भाषाओं के प्रभाव से अछूती नहीं रही है, जिसके परिणामस्वरूप इसकी भाषायी संरचना और शब्दावली निरंतर समृद्ध होती गई। विभिन्न ऐतिहासिक कालखंडों में सांस्कृतिक तथा राजनीतिक संपर्कों के प्रभाव में हिंदी भाषा में परिवर्तन और विकास होता रहा है। आधुनिक हिंदी शब्दकोश में संस्कृत, फ़ारसी, अरबी तथा अंग्रेज़ी मूल के शब्दों के साथ-साथ तुर्की मूल के शब्द भी विद्यमान हैं, जो भाषा की बहुस्तरीय और बहुसांस्कृतिक प्रकृति को दर्शाते हैं।

प्रस्तुत लेख की विवेचना में ए.एस. बरखुदारोव, वी.एम. बेस्क्रोव्नी, जी.ए. ज़ोग्राफ तथा वी.पी. लिपेरोव्स्की के संपादन में प्रकाशित द्विखंडीय "हिंदी–रूसी शब्दकोश" को प्रमुख स्रोत के रूप में प्रयोग किया गया है। चूँकि यह अध्ययन प्रारंभिक स्तर का शोध कार्य है, अतः इस शोध में केवल शब्दकोश के प्रथम खंड का ही उपयोग किया गया है।

हिंदी भाषा में तुर्की मूल के शब्दों के प्रवेश के कारणों को लेकर विभिन्न मत और परिकल्पनाएँ विद्यमान हैं। सामान्यतः यह माना जाता है कि दक्षिण एशिया की भाषाओं में तुर्की शब्दों का प्रवेश मुख्यतः ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य हुआ। इस प्रक्रिया के प्रारंभिक और महत्वपूर्ण चरणों में से एक ग़ज़नवी वंश द्वारा भारत पर किए गए सैन्य अभियानों से संबंधित है। महमूद ग़ज़नवी द्वारा उत्तर भारत के क्षेत्रों पर किए गए सैन्य आक्रमणों के परिणामस्वरूप न केवल उनके राज्य का विस्तार हुआ, बल्कि तुर्की मूल के शब्दों के भारतीय सांस्कृतिक और भाषायी परिवेश में प्रवेश की प्रक्रिया भी आरंभ हुई।

इसके पश्चात दिल्ली सल्तनत के काल में हिंद और तुर्की संस्कृतियों के पारस्परिक समन्वय की प्रक्रिया और अधिक सशक्त हुई, जिसके परिणामस्वरूप दोनों राज्यों की जनता के मध्य स्थापित संबंधों ने सांस्कृतिक एवं भाषायी स्तर पर गहरे प्रभाव छोड़े। यह अंतःक्रिया हिंदी भाषा की शब्दावली में तुर्की मूल के शब्दों के स्थायी रूप से समावेश का एक महत्वपूर्ण कारण बनी।

इस लेख के लिए स्रोत के रूप में प्रयुक्त शब्दकोश के आधार पर निम्नलिखित तुर्की मूल के शब्दों की पहचान की गई है:

- ağā (तुर्की) अग़ा — स्वामी, मालिक
- azbak (तुर्की) उज़बेक — उज़्बेक
- qazzak (तुर्की) कोज़ोक — लुटेरा, डाकू
- kurta (तुर्की) क़ुरता — कुरता, कमीज़
- quli (तुर्की) क़ुली — भार वहन करने वाला;
  क़ुली + कवाड़ी (तुर्की + हिंदी) — मज़दूर वर्ग
- chaqmaq (तुर्की) चक़मक़ — चकमक पत्थर
- capqulishi (तुर्की) चपकुलिशी — कठिन स्थिति
- cilam+ci (तुर्की) चिलमची — मुँह धोने का पात्र
- zunbur + ci (अरबी + तुर्की) जंबुरची — सैनिक
- jurrāb (तुर्की) जुर्राब — मोज़ा
- tank + chi (अंग्रेज़ी + तुर्की) टैंक्ची — टैंक चालक
- tamanca (तुर्की) तमंचा — पिस्तौल
- tamg'a (तुर्की) तमगा — निशान, पदक
- tabil + ci (अरबी + तुर्की) तबीलचा — तबेला/ताशा बजाने वाला
- talash (तुर्की + हिंदी) तलाशना — खोज करना

उपर्युक्त संकलित शब्दों को उनके अर्थगत एवं प्रयोगात्मक स्वरूप के आधार पर निम्नलिखित विषयगत समूहों में वर्गीकृत किया गया है:विषयगत वर्गीकरण

1. सैन्य क्षेत्र से संबंधित शब्द

इस समूह में सैन्य faoliyat, qurol-aslaha va harbiy lavozimlarni ifodalovchi turkiy o‘zlashmalar kiritildi:

• zunbur + ci (अरबी + तुर्की) जंबुरची — सैनिक
• tank + chi (अंग्रेज़ी + तुर्की) टैंक्ची — टैंक चालक
• qazzak (तुर्की) कोज़ोक — डाकू, लुटेरा
• tamanca (तुर्की) तमंचा — पिस्तौल

2. पद, दर्जा एवं उपाधि से संबंधित शब्द

इस वर्ग में सामाजिक स्थिति, पेशा तथा उपाधि को व्यक्त करने वाले शब्द सम्मिलित हैं:

• āğā (तुर्की) अग़ा — स्वामी, मालिक
• quli (तुर्की) कुली — भार वहन करने वाला
• कुली + कवाड़ी (तुर्की + हिंदी) — श्रमिक वर्ग
• tabil + ci (अरबी + तुर्की) तबीलची — ताशा/नगाड़ा बजाने वाला

3. दैनंदिन जीवन एवं घरेलू वस्तुओं से संबंधित शब्द

इस समूह में रोज़मर्रा के उपयोग में आने वाली वस्तुओं को दर्शाने वाले शब्द शामिल हैं:

• cilam-ci (तुर्की) चिलमची — कुल्ला करने हेतु विशेष पात्र
• jurrāb (तुर्की) जुर्राब — मोज़ा
• kurta (तुर्की) क़ुरता — कुरता, कमीज़
• chaqmaq (तुर्की) चक़मक़ — चकमक पत्थर

4. जातीय अथवा सामाजिक वर्ग से संबंधित शब्द

इस श्रेणी में किसी विशिष्ट जाति या समुदाय को दर्शाने वाले शब्द रखे गए हैं:

• azbak (तुर्की) उज़बेक — उज़्बेक

5. धातु अथवा प्रतीकात्मक वस्तुओं से संबंधित शब्द

इस समूह में धातु से निर्मित या प्रतीकात्मक अर्थ रखने वाली वस्तुएँ सम्मिलित हैं:

• tamg‘a (तुर्की) तमगा — पदक, चिन्ह

6. क्रिया या कार्यवाचक शब्द

इस वर्ग में क्रिया अथवा गतिविधि को व्यक्त करने वाले शब्द शामिल हैं:

• talash (तुर्की + हिंदी) तलाशना — खोज करना

संग्रहीत भाषायी तथ्यों के आधार पर यह परिकल्पना प्रस्तुत करना तर्कसंगत प्रतीत होता है कि तुर्की भाषाओं से हिंद–आर्य भाषाओं में शब्दों का प्रवेश मुख्यतः सैन्य अभियानों के दौरान मौखिक माध्यम से हुआ। इसका कारण यह है कि संकलित उदाहरणों में सर्वाधिक शब्द सैन्य क्षेत्र तथा दैनिक जीवन और घरेलू उपयोग से संबंधित पाए गए हैं। उदाहरणस्वरूप, करावल (तुर्की qaraval

— पहरेदार), खजांची (अरबी ख़ज़ाना + तुर्की प्रत्यय -ची — कोषाध्यक्ष), कैंची (मध्य एशियाई qeinchi — कैंची), कोरमा (qorma — एक व्यंजन का नाम) आदि शब्द उल्लेखनीय हैं।

उक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि ये शब्द हिंदी भाषा में कुछ निश्चित ध्वन्यात्मक परिवर्तनों के साथ समाहित हुए हैं। यह तथ्य इस परिकल्पना को सुदृढ़ करता है कि इन शब्दों का ग्रहण मुख्यतः मौखिक संपर्क के माध्यम से हुआ। यद्यपि इस विषय पर प्रत्यक्ष लिखित ऐतिहासिक प्रमाण सीमित हैं, तथापि शब्दों में पाए जाने वाले ध्वन्यात्मक परिवर्तन इस धारणा की पुष्टि करते हैं।

अनुसंधान के परिणामस्वरूप यह भी स्पष्ट हुआ है कि यद्यपि आधुनिक हिंद–आर्य भाषाओं में तुर्की मूल के शब्दों की संख्या अन्य भाषाओं (जैसे संस्कृत, फ़ारसी, अरबी या अंग्रेज़ी) से उधार लिए गए शब्दों की तुलना में अपेक्षाकृत कम है, फिर भी ये शब्द दैनिक मौखिक संप्रेषण में व्यापक रूप से प्रयुक्त होते हैं। इसके अतिरिक्त, ये शब्द हिंद–आर्य भाषाओं से संबंधित शब्दकोशों में भी दर्ज हैं। साथ ही, तुर्की मूल के इन उधार शब्दों के आधार पर हिंद–आर्य भाषाओं के आंतरिक नियमों के अनुसार नई शब्दावली का निर्माण होना इस शोध दिशा की प्रासंगिकता और महत्त्व को और अधिक रेखांकित करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. रहमतजोनोंवा, क., सालिमबेकोव, न. दक्षिण एशिया में तुर्की भाषाओं के प्रवेश के प्रारंभिक चरणों पर “Problems of research and education of the Uzbek languages” विषयक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही, ताशकंद, 2022, पृ. 224–232 |

2. हिंदी–रूसी शब्दकोश। संपा.: ए.एस. बरखुदारोव, वी.एम. बेस्क्रोव्नी, जी.ए. ज़ोग्राफ, वी.पी. लिपेरोव्स्की। मॉस्को, 1972

3. Agniezska Kuczkiewicz-Fras (Krakow) Turkic in India and its elements in Hindi – Studia turcologia cracoviensia – 8, 2001

4. https://uz.eferrit.com/sanskrit-hindistonning-muqaddas-tili